एक और द्रोणाचार्य :एक मूल्यांकन

लक्ष्मी जायसवाल

Abstract

जिसमें छल मिला हुआ है वह सत्य नहीं है।' क्या बकवास और फिजूल की बातें! इसको कहने की जरूरत है कि जिसमें छल मिला है वह सत्य नहीं है? मगर ये तरकीबें हैं। ये तरकीबें हैं यह बताने की कि हमारा सत्य ही सत्य है, औरों के सत्य में छल मिला हुआ है। यह दुकानदारी की भाषा है, यह व्यवसायिक भाषा है--कि असली घी यहीं बिकता है, बाकी सब घी नकली है। जैन शास्त्र कहते हैं कि जैन शास्त्र ही सदशास्त्र हैं और बाकी सब शास्त्र असद; जैन गुरु ही सदगुरु हैं, बाकी सब गुरु कुगुरु; जैन धर्म ही सत्य धर्म है, बाकी सब धर्म कुधर्म हैं। और कुधर्म से बचना, क्योंकि उसमें छल है। जहां छल है वहां सत्य नहीं। यही महाभारत भी कोशिश कर रहा है कि जिसमें छल मिला हो वहां सत्य नहीं है। हालांकि महाभारत पूरा का पूरा छल से भरा हुआ है। छल ही छल है। द्रोणाचार्य की इतनी प्रशंसा है महाभारत में, उनको महागुरु कहा है और इससे ज्यादा छल वाला आदमी खोजना कठिन है। इसने एकलव्य को इनकार कर दिया शिक्षा देने से, क्योंकि एकलव्य शूद्र है। सत्य भी इसकी फिकर करता है कि कौन ब्राह्मण है, कौन शूद्र है? और द्रोण अगर इतने बड़े गुरु थे तो इनके पास इतनी भी आंखें नहीं थीं कि एकलव्य की संभावना को पहचान सकते? एकलव्य कहीं ज्यादा प्रामाणिक व्यक्ति सिद्‌ध हुआ। उसने दूर जंगल में जाकर एक प्रतिमा बना ली द्रोण की। मान लिया जिसको गुरु मान लिया। गुरु ने इनकार भी कर दिया तो भी उसने अपनी धारणा को नहीं तोड़ा। गुरु के इनकार ने भी उसके समर्पण को नहीं मिटाया। यह समर्पण है! गुरु ने ठुकराया तो भी उसने गुरु को नहीं ठुकराया। एक दफे जो कर दिया समर्पण तो कर दिया।

तो जंगल में मूर्ति बना कर ही धनुर्विद्‌या का अभ्यास शुरू कर दिया। और जल्दी ही खबरें आने लगी कि उसकी धनुर्विद्‌या ऐसी प्रकीर्ण होती जा रही है कि द्रोणाचार्य जिन शिष्यों को तैयार कर रहे हैं--वे सब राजपुत्र थे--उन सबको मात कर देगा वह। अर्जुन पर बड़ी आशा थी, क्योंकि अर्जुन उनका श्रेष्ठतम धनुर्धर था। और जब यह भी खबर आई कि अर्जुन भी एकलव्य के सामने कुछ नहीं है, तो यह तथाकथित महान गुरु, यह महान ब्राह्मण, यह राजपत्रों को धनर्विद्या सिखाने वाला, महाभारत में जिसकी प्रशंसा ही प्रशंसा भरी है, यह दक्षिणा लेने पहुंच गया--उस शिष्य के पास, जिसको कभी इसने दीक्षा दी ही नहीं थी! अब बेईमानी की भी कोई सीमा होती है! छल और पाखंड का भी कोई अंत है! जिसको दीक्षा नहीं दी उससे दक्षिणा लेने जाना, शर्म भी न आई!

मुझे एकलव्य मिल गया होता तो कहती , 'थूक इस आदमी के मुंह पर! जी भर कर थूक! इसको पीकदानी समझ! यही इसकी दक्षिणा है। यह शूद्र है, तू ब्राह्मण है। इसकी छाया भी पड़ जाए तो स्नान कर!' मगर एकलव्य की भी प्रशंसा करता है महाभारत। प्रशंसा का कारण यह है कि उसने दक्षिणा देने की तैयारी दिखलाई। और दक्षिणा में क्या मांगा द्रोणाचार्य ने? उसके दाएं हाथ का अंगूठा मांग लिया! और क्या छल होगा? यह अंगूठा इसलिए मांग लिया कि न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। यह अंगूठा कट गया तो धनुर्विद्या खतम। फिर यह अर्जुन का प्रतियोगी न रह जाएगा। यह राजपुत्र को बचाने के लिए गरीब के बेटे की हत्या। जिससे धन मिल रहा है उसको बचाने के लिए, उसकी हत्या जिसके पास कुछ भी नहीं है और जिसने अपना सब देने की तैयारी दिखलाई। उसने तत्क्षण, देर की न अबेर की, सोच किया न विचार किया और अंगूठा काट कर दे दिया। यह द्रोणाचार्य की प्रशंसा इसलिए कि उन्होंने शूद्र को इनकार किया। और एकलव्य की प्रशंसा इसलिए कि उसने इस पाखंडी और छली आदमी को अपना अंगूठा काट कर दे दिया। उपदेश यह है कि गुरु सदा ऐसा करेंगे और शिष्यों को सदा ऐसा करना चाहिए।

प्राक्कथन

‘ जिसमें छल मिला हुआ है वह सत्य नहीं है।' क्या बकवास और फिजूल की बातें! इसको कहने की जरूरत है कि जिसमें छल मिला है वह सत्य नहीं है? मगर ये तरकीबें हैं। ये तरकीबें हैं यह बताने की कि हमारा सत्य ही सत्य है, औरों के सत्य में छल मिला हुआ है। यह दुकानदारी की भाषा है, यह व्यवसायिक भाषा है--कि असली घी यहीं बिकता है, बाकी सब घी नकली है। जैन शास्त्र कहते हैं कि जैन शास्त्र ही सदशास्त्र हैं और बाकी सब शास्त्र असद; जैन गुरु ही सदगुरु हैं, बाकी सब गुरु कुगुरु; जैन धर्म ही सत्य धर्म है, बाकी सब धर्म कुधर्म हैं। और कुधर्म से बचना, क्योंकि उसमें छल है। जहां छल है वहां सत्य नहीं। यही महाभारत भी कोशिश कर रहा है कि जिसमें छल मिला हो वहां सत्य नहीं है। हालांकि महाभारत पूरा का पूरा छल से भरा हुआ है। छल ही छल है।

द्रोणाचार्य की इतनी प्रशंसा है महाभारत में, उनको महागुरु कहा है और इससे ज्यादा छल वाला आदमी खोजना कठिन है। इसने एकलव्य को इनकार कर दिया शिक्षा देने से, क्योंकि एकलव्य शूद्र है। सत्य भी इसकी फिकर करता है कि कौन ब्राह्मण है, कौन शूद्र है? और द्रोण अगर इतने बड़े गुरु थे तो इनके पास इतनी भी आंखें नहीं थीं कि एकलव्य की संभावना को पहचान सकते? एकलव्य कहीं ज्यादा प्रामाणिक व्यक्ति सिद्ध हुआ। उसने दूर जंगल में जाकर एक प्रतिमा बना ली द्रोण की। मान लिया जिसको गुरु मान लिया। गुरु ने इनकार भी कर दिया तो भी उसने अपनी धारणा को नहीं तोड़ा। गुरु के इनकार ने भी उसके समर्पण को नहीं मिटाया। यह समर्पण है! गुरु ने ठुकराया तो भी उसने गुरु को नहीं ठुकराया। एक दफे जो कर दिया समर्पण तो कर दिया।

तो जंगल में मूर्ति बना कर ही धनुर्विद्या का अभ्यास शुरू कर दिया। और जल्दी ही खबरें आने लगी कि उसकी धनुर्विद्या ऐसी प्रकीर्ण होती जा रही है कि द्रोणाचार्य जिन शिष्यों को तैयार कर रहे हैं--वे सब राजपुत्र थे--उन सबको मात कर देगा वह। अर्जुन पर बड़ी आशा थी, क्योंकि अर्जुन उनका श्रेष्ठतम धनुर्धर था। और जब यह भी खबर आई कि अर्जुन भी एकलव्य के सामने कुछ नहीं है, तो यह तथाकथित महान गुरु, यह महान ब्राह्मण, यह राजपत्रों को धनर्विद्या सिखाने वाला, महाभारत में जिसकी प्रशंसा ही प्रशंसा भरी है, यह दक्षिणा लेने पहुंच गया--उस शिष्य के पास, जिसको कभी इसने दीक्षा दी ही नहीं थी! अब बेईमानी की भी कोई सीमा होती है! छल और पाखंड का भी कोई अंत है! जिसको दीक्षा नहीं दी उससे दक्षिणा लेने जाना, शर्म भी न आई!

मुझे एकलव्य मिल गया होता तो कहती , 'थूक इस आदमी के मुंह पर! जी भर कर थूक! इसको पीकदानी समझ! यही इसकी दक्षिणा है। यह शूद्र है, तू ब्राह्मण है। इसकी छाया भी पड़ जाए तो स्नान कर!' मगर एकलव्य की भी प्रशंसा करता है महाभारत। प्रशंसा का कारण यह है कि उसने दक्षिणा देने की तैयारी दिखलाई। और दक्षिणा में क्या मांगा द्रोणाचार्य ने? उसके दाएं हाथ का अंगूठा मांग लिया! और क्या छल होगा? यह अंगूठा इसलिए मांग लिया कि न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। यह अंगूठा कट गया तो धनुर्विद्या खतम। फिर यह अर्जुन का प्रतियोगी न रह जाएगा। यह राजपुत्र को बचाने के लिए गरीब के बेटे की हत्या। जिससे धन मिल रहा है उसको बचाने के लिए, उसकी हत्या जिसके पास कुछ भी नहीं है और जिसने अपना सब देने की तैयारी दिखलाई। उसने तत्क्षण, देर की न अबेर की, सोच किया न विचार किया और अंगूठा काट कर दे दिया। यह द्रोणाचार्य की प्रशंसा इसलिए कि उन्होंने शूद्र को इनकार किया। और एकलव्य की प्रशंसा इसलिए कि उसने इस पाखंडी और छली आदमी को अपना अंगूठा काट कर दे दिया। उपदेश यह है कि गुरु सदा ऐसा करेंगे और शिष्यों को सदा ऐसा करना चाहिए।

प्रथम अध्याय

१.प्रस्तावना

एक और द्रोणाचार्य नाटक का प्रकाशन १९७७ में हुआ है इसके रचयिता डॉ.शंकर शेष हैं |

' एक और द्रोणाचार्य ' नाटक को डॉ.शंकर शेष ने दो भागों में बाटा है एक पूर्वाद्ध है दूसरा उत्तराद्ध है यह नाटक में दो कथा समानांतर चल रहा है|

दो कथा में एक प्रकार से तुलना की गई है इस नाटक के पूर्वाद्ध में वर्तमान शिक्षक अरविंद की कथा है और उत्तरार्ध में वर्तमान शिक्षक और द्रोणाचार्य दोनों कथा समानांतर चल रही हैं |

महाभारत काल में गुरु द्रोणाचार्य ने अन्याय सहने की परंपरा का स्थापना किया| गुरु द्रोणाचार्य के आदर्श और विचार सत्ता के नीचे दबे थे उसी तरह से एक द्रोणाचार्य नाटक में अरविंद के आदर्श और विचार सत्ता तले दब कर रह जाते हैं |

एक और द्रोणाचार्य नाटक में आर्थिक अभाव,राजनीतिक सत्ता

का दबाव, गुरु द्रोणाचार्य और आधुनिक शिक्षक ने प्रतिकार नहीं किया ,गुरु द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य के साथ किए गए अन्याय का चित्रण डॉ शंकर शेष ने किया है |

'एक और द्रोणाचार्य' शंकर शेष का सर्वश्रेष्ठ नाटक है जिसका आज भी जीवंतता के साथ मंचन किया जाता है। कहानी में वर्तमान शिक्षक की तुलना उस द्रोणाचार्य से की जाती है, जिसने एक शिक्षक को अन्याय सहने की परंपरा दे डाली और उसे इतिहास हमेशा कोसता रहेगा।

अरविंद जो कि एक शिक्षक है और अपनी नियमित आय से अपनी गृहस्थी चला रहा है, लेकिन सत्ता के दबाव में आकर उसकी आदर्शात्मक, सिद्धांत, उसकी सोच धरी की धरी रह जाती है और वो व्यवस्था की कठपुतली बनकर रहा जाता है। विमलेंदु जो ठीक वैसा ही पात्र है जिसने शिक्षक के रूप में सत्ता व व्यवस्था के विरोध में अपनी जान गंवाई उसे झकझोरता है और अरविंद से कहता है कि जाओ तुम भी समझोता करो। यदि समाज तुम्हें भौंकने वाला कुत्ता बनाना चाहता है तो तुम बनो क्योंकि व्यवस्था के विपरीत नही चल सकते। यदि चलोगे तो तुम्हें भी मेरी तरह मार दिया जाएगा। नाटक में बहुत से ऐसे प्रश्न हैं, जिनमें एक शिक्षक स्वयं ही उलझ कर रह जाता है। ठीक वैसे ही जब युद्ध भूमि में द्रोण ने युद्धिष्ठर से पूछा था कि कौन मारा गया.. अश्वथामा नाम का हाथी या पुत्र.। विमलेंदु के अंतिम वाक्य से नाटक खत्म होता है कि तु द्रोणाचार्य है। व्यवस्था और कोड़ो से पिटा हुआ द्रोणाचार्य, इतिहास की धार में लकड़ी के ठूंड की तरह बहता हुआ, वर्तमान के कगार से लगा हुआ, सड़ा गला द्रोणाचार्य। व्यवस्था के लाइटहाउस से अपनी दिशा मांगनेवाला टूटे जहाज सा द्रोणाचार्य।

2. कथासार

' एक और द्रोणाचार्य ' नाटक को डॉ.शंकर शेष ने दो भागों में बाटा है एक पूर्वाद्ध है दूसरा उत्तराद्ध है यह नाटक में दो कथा समानांतर रूप से चलता है|

1. पूर्वाद्ध (पृष्ठ क्र 92 -116)

प्रोफेसर अरविंद मन से दुखी हैं | उसकी पत्नी लीला उसे घर की बातों से बेखबर रहने के लिए ताने दे रही है| उसी समय

अरविंद का सहकारी मित्र यदू खबर देता हैं, कि अरविंद द्वारा प्रेसिडेंट के लड़के को पकड़ा गया, नकल का मामला दबा देने का कोशिश चल रहा है |कॉलेज के छात्रों ने मामला दबा देने के प्रयास के खिलाफ आवाज उठाई है | अपनी रिपोर्ट वापस लेने के लिए प्रिंसिपल भी अरविंद पर दबाव डालने के कोशिश में है यदू और लीला भी उससे यही सलाह दे रहे हैं किंतु आदर्शवादी अरविंद शिक्षा क्षेत्र की बुरी स्थिति में उसका खून खोलता है| यदू आगे की जानकारी लेने, तो अरविंद सिगरेट लेने निकल पड़ते हैं|

यदू और अरविंद के निकल जाने पर प्रिंसिपल आते हैं| प्रिंसिपल लीला को समझाते हैं कि वह अरविंद को रिपोर्ट वापस लेने के लिए तैयार करें| रिपोर्ट वापस नहीं लिया तो उसका परिणाम अच्छा नहीं होगा ऐसा बताते हैं |इस

घटना से हो सकता है कि प्रेसिडेंट कॉलेज ही बंद कर दे और सभी को बेकार बनाना पड़े | अतः सभी को अपनी रोटी की फिक्र लगी हुई है | चुंगी नाके के क्लर्क के पद से प्रिंसिपल के पद तक अपने चढ़ आने की बात भी प्रिंसिपल बताते हैं | तीस साल उन्होंने यही किया अतः अरविंद को समझाते हैं और सलाह देकर चले जाते हैं|

लीला अरविंद को प्रिंसिपल से हुई बातें बताकर रिपोर्ट वापस लेने के लिए हठ करती है | इसी समय अरविंद का प्रिय विद्यार्थी चंदू आता है | वह बताता है कि प्रोफेसर मिश्रा ने नकल के झूठे आरोप में उसे फसाया है | उसके सामने ही प्रेसिडेंट का लड़का नकल कर रहा था | हवा के झोंकों से उसका नकल का पर्चा चंदू के पास आया | चंदू ने जब उसे प्रोफेसर को देने उठाया, तो मिश्रा ने उसे पकड़ा और रिपोर्ट कर दी | अब उसकी रिपोर्ट यूनिवर्सिटी भेजी जा रही है राजकुमार की रिपोर्ट दबाई जा रही है | चंदू के पिता प्रेसिडेंट के राजनीतिक विरोधक है, अतः उसे विरोध की बलि बनाया जा रहा है विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में चंदू चाहता है कि राजकुमार की रिपोर्ट भी यूनिवर्सिटी भिजवाई जाये |

चंदू के जाने के बाद प्रेसिडेंट आते हैं | वह नकल के मामलों में सभी को दोषी मानते हैं| प्रेसिडेंट अपनी राजनीतिक प्रतिमा कलंकित न हो इसलिए वह अपने बेटे की रिपोर्ट दबाना चाहते हैं, तथा ऐसे न होने पर कॉलेज बंद कर देने का डर दिखाता है | परंतु अरविंद अपने निर्णय पर डटा रहता है |

नौकरी चली जाने का भय उसके संदर्भ में नाकाम होता है | और प्रेसिडेंट अरविंद को प्रिंसिपल बनाने की बात कहकर तथा निर्णय के लिए समय लेकर चले जाते हैं |

अब लीला अरविंद को प्रिंसिपल बन जाने की सलाह देती है | यदू भी खबर देता है कि शहर में तनाव बढ़ रहा है | चंदू तथा उसके साथी अरविंद का नाम लेकर जिंदाबाद के नारे लगा रहे हैं, तो राजकुमार और उसके साथी अरविंद को मार डालने की योजना बना रहे हैं | यदू बताता है कि न्याय का पक्ष लेने से ही उनके पुराने साथी विमलेन्दु की हत्या हो चुकी थी | अतः यदू समझाता है कि अरविंद प्रिंसिपल बनकर उसके लिए व्हाइस प्रिंसिपल का रास्ता बनाये | लीला का भी यही हट है |

दुविधा में पड़े अरविंद के सामने उसके पुराने साथी तथा मृत मित्र नाटककार विमलेन्दु की छायाकृति उभरती है | अरविंद उसके बलिदान से प्रभावित है, पर विमलेन्दु उसे बलिदान न मानकर मूर्खता है कहता है,- उसकी सहायता के बाद प्रत्येक ने उसे क्रांतिकारी हुतआत्मा बतलाया था, पर किसी ने कोई भी सहायता नहीं की थी | अब साल भर हुआ है, उसकी बीवी नौकरी के लिए हर जगह ठोकरे खा रही है इसलिए मुझ जैसी मूर्खता तुम भी मत करो | द्रोणाचार्य को याद करो......| '

धीरे-धीरे आने वाले प्रकाश में महाभारत की कथा प्रारंभ होती है- द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा दूध पिलाने का हट लिए माता के सामने रो रहा है | घर में दूध है ही नहीं | माता कृपी उसे समझाती है, पर वह मानता नहीं है | जब द्रोणाचार्य आते हैं, तब कृपी अश्वत्थामा को दूध के नाम पर आटे का घोल पिला रही है| दूध पीने का हठ पूरा होने से संतुष्ट अश्वत्थामा बाहर खेलने जाता है | द्रोणाचार्य के पूछने कृपी उसे आटे का दूध पिलाने की बात बताती है तब

द्रोणाचार्य अत्यंत निराश होकर द्रुपद के पास जाते हैं पर द्रुपद से वे अपमानित हो जाते हैं | तब कृपी योजना बद्ध तरीके से अपने अपमान का बदला लेने के लिए द्रोणाचार्य को प्रोत्साहित करती हैं |

इसी समय कौरव पांडवों के पितामह भीष्म द्रोणाचार्य को राजकुमारों के गुरु नियुक्त करने के विचार से उन्हें निमंत्रण करने आते हैं | भीष्म ने सुना था कि द्रोणाचार्य ने राजकुमारों की गेंद अपनी शास्त्र विघा से कुएं से निकाले थे | अतः वे ही आचार्य पद के योग्य है परंतु द्रोणाचार्य अपना स्वतंत्र आश्रम स्थापित करने की बात सोच रहे थे | लेकिन भीष्म के रूप में एक मौका सामने देख दारिद्र से ऊबी कृपी यह निमंत्रण स्वीकार कर लेती है | द्रोणाचार्य कुछ कहना चाहने पर भी कह नहीं पाते कृपी गुरु वंश के आश्रम से द्रुपद से बदला लेने का मौका मिलने की बात कहकर द्रोण को मानसिक रूप में तैयार करती है|

कौरव पांडव विद्या ग्रहण कर रहे हैं ' जंगल में शिकार के लिए द्रोण तथा उनके शिष्य पहुंचे हैं | पर कहीं से कुशलता से बाण आते हैं कि हिरनो के पीछे लगे कुत्तों का भोकना ही बंद हो जाता है | खोजते हुए सब एकलव्य के पास पहुंचते ही एकलव्य द्रोणाचार्य को अपना गुरु मानता है, उन्होंने उसे शिष्य के रूप में स्वीकार करने से नकारा था | बाद में एकलव्य ने द्रोण का पुतला बनाकर अपनी साधना से आश्चर्यकारक कौशल प्राप्त किया था | एकलव्य इसे गुरु कृपा ही मानकर गुरु दक्षिणा के रूप में मुंह मांगा धन, राज तथा अपने प्राण भी देने के लिए तैयार है | तब द्रोणाचार्य एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अंगूठा मांगते हैं |

अर्जुन भी इस अजीब गुरु दक्षिणा की मांग से चकित है | द्रोणाचार्य बताते हैं कि अर्जुन को एक मात्र श्रेष्ठ वीर बनाने के लिए ही उन्होंने ऐसा किया है | तभी एक थाल में कटे हुए अंगूठे को लिए एकलव्य आता है और गुरु दक्षिणा समर्पित करता है |

2) उत्तरार्ध (पृष्ठ क्र 116 - 142)

अरविंद प्रिंसिपल बना है, पर हमेशा चिंतित रहता है | लीला अब खुश है | उसका बेटा प्रथम आया है, किंतु अरविंद खुशी मनाने की मनस्थिति मे नहीं है | प्रेसिडेंट के लड़के राजकुमार ने कॉलेज गार्डन में अनुराधा नाम की कॉलेज की विद्यार्थीनी के साथ बलात्कार करने की कोशिश की थी, जिसका एकमात्र गवाह अरविंद ही है | अनुराधा ने प्राचार्य अरविंद के पास शिकायत की थी | अरविंद राजकुमार को कॉलेज से निकाल देने की बात पर विचार कर रहा है यदू और लीला इस झमेले में न पड़ने की सलाह दे रहे हैं | इसकी जिंदगी ने तथा सुविधाओं ने मानो उसकी संवेदनाओं को मार डाला है इसी पर अरविंद अधिक बोखलाता है | प्रेसिडेंट के आगमन पर यदू निकल जाता है' |

इसके बाद अनुराधा आती है | उस के मां-बाप भी प्रेसिडेंट के भय से बात उठाना नही चाहते है | राजकुमार ने उसे अपहरण करने का और पिताजी को जान से मारने का भय दिखाया है, मगर वह अरविंद के भरोसे न्याय पाना चाहती है, फिर भी अशकित है | क्योंकि तीन साल पहले भी अरविंद ने प्रिंसिपल का पद पाकर चंदू को धोखा दिया, चंदू रेस्टिकेट हुआ

था, विद्यार्थियों पर लाठी चार्ज हुआ था | इन सब बातों पर अरविंद उसका साथ देने का निश्चय प्रकट

करता है, तभी प्रेसिडेंट का फोन आता है | विरोध में खड़े होने पर पंद्रह हजार के गबन मे गिरफ्तारी की बात सुनकर अरविंद घबरा जाता है और अनुराधा को ही शिकायत वापस लेने की सलाह देने लगता है | अरविंद में आए इस परिवर्तन को देखकर निराश अनुराधा निकल जाती है |अरविंद लीला को प्रेसिडेंट की बात बता ही रहा है तभी ट्रक दुर्घटना में अनुराधा की मर जाने की खबर पहुंचती है अरविंद आहत होता है |

इस्तीफा लिखनेवाले अरविंद के सामने विमलेन्दु की छाया प्रकट होती है और इस्तीफा फाड़ देने की सलाह देती है | विमलेन्दु इस मामले मे अकेले अरविंद को जिम्मेदार नहीं मानता है | विमलेन्दु बताता है कि उसकी पत्नी को छोटी सी नौकरी मिल गई है, और उसका साठ साल का बुढ़ा अफसर प्रमोशन के बहाने उसपर डोरे डाल रहा है | दुनिया में यही चल रहा है अतः तुम प्रेसिडेंट का साथ दो | हो सकता, प्रेसिडेंट मंत्री बनेगा और शिक्षा मंत्री भी बनेगा तो साथ देने पर वह तुम्हारे लिए कुछ कर देगा | अरविंद अनुराधा के बारे मौत के बारे में तिलमिलाहट व्यक्त करता है, तब विमलेन्दु नारी के अपमान की
बात को बहुत पुरानी परंपरा बताता है | अतः द्रोपदी के उदाहरण को याद करने के लिए कह देता है और अंधकार में विलीन हो जाता है |

धीरे-धीरे प्रकाश में महाभारत की कथा प्रारंभ होता है | अश्वत्थामा भरे दरबार में द्रोपदी का अपमान होने पर भी सभी के चुप रहने से उदास है | वह मां से पूछता है कि मेरे पिताजी चुप क्यों रहे ? मेरा खून भी नहीं ख़ौला ? मेरे संस्कारों में क्या गड़बड़ी थी ? कृपी पिता से पूछने के लिए कहती है | उनसे पूछने पर वे माता की और संकेत कर देते हैं | फिर बताते हैं कि " उस दिन भूख मेरे सिद्धांत से बड़ी हो गयी | प्रतिशोध ने विवेक को जीता | उस दिन तुमने मुझे भड़काया और सुख सुविधा तथा राजकीय सम्मान ने मोहित किया था | राजकीय अन्न की वासना ने विवेक को उसी समय खरीदा था | अब इसमें परिवर्तन असंभव है और इसका परिणाम युद्ध तथा सर्वनाश के सिवा दूसरा हो ही नहीं सकता |"

दृश्य परिवर्तन के सूचक अंधकार प्रकाश के बाद जेल की कोठरी में टूटा अरविंद खड़ा है | धीरे-धीरे विमलेंदु की शरीराकृति उभरती है और कथा पर प्रकाश पड़ता जाता है | अरविंद प्रेसिडेंट की हत्या में कैद है |

प्रेसिडेंट एक बड़े क्लिफ से गिरकर मर चुका है , परंतु उसे धक्का देकर मार डालने के आरोप में अरविंद पकड़ लिया जाता है | उस घटना का एक मात्र दर्शन चंदू है | वह अनुराधा की मौत से पागल सा बना आत्महत्या करने उस क्लिफ की ओर गया था | अरविंद को चंदू की गवाही पर विश्वास है कि वह उसे बचा लेगा और बताएगा कि वह हत्या नहीं, दुर्घटना था |

परंतु कोर्ट की कार्यवाही में चंदू अनुराधा का पत्र पेश करता है, जिसमें उसे पर बीती सभी बातें लिख दी थी | उनके आधार पर अरविंद के चारों ओर आरोप के शिकंजे और भी दृढ़ हो जाते हैं | " क्या अरविंद ने प्रेसिडेंट को धकेला था ? इस प्रश्न पर चंदू - हो सकता है ' इतना ही उत्तर दे चुका था | अब अरविंद विमलेंदु से पूछता है कि, " चंदू सच क्यों

नहीं बोला ? " तब विमलेन्दु अपने द्रोणाचार्य नाटक को याद करने के लिए कहता है |

कौरव - पांडवों के युद्ध में पंद्रवे दिन जब द्रोणाचार्य की सेनापतित्व में कहर ढाया जा रहा था, तब अश्वात्थामा मारे जाने की खबर फैलती हैं | द्रोणाचार्य सच्चाई जानने के लिए बेकाबू बने हैं, पर कोई सत्य नहीं बता सकता है |

अंत में द्रोणाचार्य युधिष्ठिर से गुरुदक्षिणा के रूप में सच्चाई पूछते हैं | द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा के मारे जाने की सच्चाई समझने के लिए ध्यानस्थ होते हैं | इसी समय पांडवों के सेनापति घृस्टदयुम्न द्वारा द्रोणाचार्य का वध किया जाता है |

फिर एक बार जेल की कोठरी की पार्श्वभूमि पर अरविंद और विमलेन्दु सामने आते हैं | विमलेंदु इन सभी शोकान्तिकाओ के मूल में झूठ बोलने के लिए मजबूर करने वाली व्यवस्था को दोषी ठहराता है | वह बताता है कि, उसकी पत्नी उसे बूढ़े अवसर से अपने आप को बचाने के लिए शहर छोड़ कर चली गई है | अंत मैं वहां अरविंद को एक और द्रोणाचार्य - व्यवस्था और सत्ता के कोंड़ो से पीटा हुआ द्रोणाचार्य, इतिहास की धार में लकड़ी से ठूँठ की तरह बहता हुआ, वर्तमान की कगार से लगा हुआ - सड़ा गला द्रोणाचार्य कहता हुआ ओझल हो जाता है |

द्वितीय अध्याय

एक और द्रोणाचार्य कथानवस्तु मे समानता और अंतर

३. कथानवस्तु में समानांतरता

३.१. आर्थिक संकट

प्रोफेसर अरविंद मन से दुखी हैं | उसकी पत्नी लीला उसे घर की बातों से बेखबर रहने के लिए ताने दे रही है| वही दूसरी ओर द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा दूध पिलाने का हट लिए माता के सामने रो रहा है | घर में दूध है ही नहीं | माता कृपी उसे समझाती है, पर वह मानता नहीं है | जब द्रोणाचार्य आते हैं, तब कृपी अश्वत्थामा को दूध के नाम पर आटे का घोल पिला रही है|

कथा के पूर्वार्द्ध मे अरविंद का सहकारी मित्र यदू खबर देता हैं, कि अरविंद द्वारा प्रेसिडेंट के लड़के को पकड़ा गया, नकल का मामला दबा देने का कोशिश चल रहा है | कॉलेज के छात्रों ने मामला दबा देने के प्रयास के खिलाफ आवाज उठाई है |

अपनी रिपोर्ट वापस लेने के लिए प्रिंसिपल भी अरविंद पर दबाव डालने के कोशिश में है यदू और लीला भी उससे यही सलाह दे रहे हैं किंतु आदर्शवादी अरविंद शिक्षा क्षेत्र की बुरी स्थिति में उसका खून खोलता है|

लीला अरविंद को प्रिंसिपल से हुई बातें बताकर रिपोर्ट वापस लेने के लिए हठ करती है | इसी समय अरविंद का प्रिय विद्यार्थी चंदू आता है | वह बताता है कि प्रोफेसर मिश्रा ने नकल के झूठे आरोप में उसे फसाया है | उसके सामने ही प्रेसिडेंट का लड़का नकल कर रहा था | हवा के झोंकों से उसका नकल का पर्चा चंदू के पास आया | चंदू ने जब उसे प्रोफेसर को देने उठाया, तो मिश्रा ने उसे पकड़ा और

रिपोर्ट कर दी | अब उसकी रिपोर्ट यूनिवर्सिटी भेजी जा रही है राजकुमार की रिपोर्ट दबाई जा रही है | चंदू के पिता प्रेसिडेंट के राजनीतिक विरोधक है, अतः उसे विरोध की बलि बनाया जा रहा है विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में चंदू चाहता है कि राजकुमार की रिपोर्ट भी यूनिवर्सिटी भिजवाई जाये | प्रेसिडेंट अरविन्द से मिलने आते हैं | वह नकल के मामलों में सभी को दोषी मानते हैं| प्रेसिडेंट अपनी राजनीतिक प्रतिमा कलंकित न हो इसलिए वह अपने बेटे की रिपोर्ट दबाना चाहते हैं, तथा ऐसे न होने पर कॉलेज बंद कर देने का डर दिखाता है | परंतु अरविंद अपने निर्णय पर डटा रहता है | नौकरी चली जाने का भय उसके संदर्भ में नाकाम होता है | और प्रेसिडेंट अरविंद को प्रिंसिपल बनाने की बात कहता है अंत मे अरविन्द को प्रिंसिपल पद मिलता है और चंदू को कॉलेज से रेस्टिकेट करदिया जाता है |

वही दूसरी ओर महाभारत की कथा आरम्भ होती है कौरव पांडवों के पितामह भीष्म द्रोणाचार्य को राजकुमारों के गुरु नियुक्त करने के विचार से उन्हें निमंत्रण करने आते हैं | भीष्म ने सुना था कि द्रोणाचार्य ने राजकुमारों की गेंद अपनी शास्त्र विघा से कुएं से निकाले थे | अतः वे ही आचार्य पद के योग्य है परंतु द्रोणाचार्य अपना स्वतंत्र आश्रम स्थापित करने की बात सोच रहे थे | लेकिन भीष्म के रूप में एक मौका सामने देख दारिद्र से ऊबी कृपी यह निमंत्रण स्वीकार कर लेती है |

द्रोणाचार्य कुछ कहना चाहने पर भी कह नहीं पाते कृपी गुरु वंश के आश्रम से द्रुपद से बदला लेने का मौका मिलने की बात कहकर द्रोण को मानसिक रूप में तैयार करती है|

कौरव पांडव विद्या ग्रहण कर रहे हैं ' जंगल में शिकार के लिए द्रोण तथा उनके शिष्य पहुंचे हैं | पर कहीं से कुशलता से बाण आते हैं कि हिरनो के पीछे लगे कुत्तों का भोकना ही बंद हो जाता है | खोजते हुए सब एकलव्य के पास पहुंचते ही एकलव्य द्रोणाचार्य को अपना गुरु मानता है, उन्होंने उसे शिष्य के रूप में स्वीकार करने से नकारा था | बाद में एकलव्य ने द्रोण का पुतला बनाकर अपनी साधना से आश्चर्यकारक कौशल प्राप्त किया था | एकलव्य इसे गुरु कृपा ही मानकर गुरु दक्षिणा के रूप में मुंह मांगा धन, राज तथा अपने प्राण भी देने के लिए तैयार है | तब द्रोणाचार्य एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अंगूठा मांगते हैं | अर्जुन भी इस अजीब गुरु दक्षिणा की मांग से चकित है | द्रोणाचार्य बताते हैं कि अर्जुन को एक मात्र श्रेष्ठ वीर बनाने के लिए ही उन्होंने ऐसा किया है | तभी एक थाल में कटे हुए अंगूठे को लिए एकलव्य आता है और गुरु दक्षिणा समर्पित करता है |

सुविधा और सुरक्षा की प्रति आकर्षण कृपी द्वारा द्रोणाचार्य को राजकीय संरक्षण प्राप्त करने के लिए विवश करता है | अरविंद भी अपनी विचार संहिता को भूलाने के लिए मजबूर हो जाता है क्योंकि पत्नी और पुत्र दोनों उसपर आश्रित है | द्रोणाचार्य अपने राजमार्ग को एकलव्य का अंगूठा लेकर और अरविंद चंदू के न्याय पूर्ण पक्ष की बलि चढ़ाकर निष्कलंक बनाते हैं |

वर्तमान समय में भी ऐसे द्रोणाचार्य है जो अपने सुख सुविधा के लिए शिक्षा को पैसे से तोल रहे हैं, और ऐसे द्रोणाचार्य के कारण शिक्षा व्यवस्था बिकाऊ हो चुकी है जो व्यक्ति प्रतिभाशाली है उसे दबाकर जो प्रतिभाशाली नहीं

है उसे ऊपर उठाया जाता है | वर्तमान समय में जिसके पास धन है, सत्ता है वही आगे जाता है जिसके पास धन नहीं है, सत्ता नहीं है वह पीछे रह जाता है |

३.२. राजनीतिक सत्ता का दबाव

दबाव की राजनीति आम तौर पर राजनीतिक कार्रवाई को संदर्भित करती है जो राजनेताओं को यह समझाने के लिए जनसंचार माध्यमों और जन संचार के उपयोग पर बहुत अधिक निर्भर करती है कि जनता किसी विशेष कार्रवाई की मांग करती है या चाहती है। हालाँकि, यह डराने-धमकाने, धमकियों और अन्य गुप्त तकनीकों का भी उल्लेख कर सकता है।

प्रेसिडेंट के लड़के राजकुमार ने कॉलेज गार्डन में अनुराधा नाम की कॉलेज की विद्यार्थीनी के साथ बलात्कार करने की कोशिश की थी, जिसका एकमात्र गवाह अरविंद ही है | अनुराधा ने प्राचार्य अरविंद के पास शिकायत की थी | अरविंद राजकुमार को कॉलेज से निकाल देने की बात पर विचार कर रहा है यदू और लीला इस झमेले में न पड़ने की सलाह दे रहे हैं | इसकी जिंदगी ने तथा सुविधाओं ने मानो उसकी संवेदनाओं को मार डाला है इसी पर अरविंद अधिक बोखलाता है |

राजकुमार ने उसे अपहरण करने का और पिताजी को जान से मारने का भय दिखाया है, मगर वह अरविंद के भरोसे न्याय पाना चाहती है, फिर भी अशकित है | क्योंकि तीन साल पहले भी अरविंद ने प्रिंसिपल का पद पाकर चंदू को धोखा दिया, चंदू रेस्टिकेट हुआ था, विद्यार्थियों पर लाठी चार्ज हुआ था | इन सब बातों पर अरविंद उसका साथ देने का निश्चय प्रकट करता है, तभी प्रेसिडेंट का फोन आता है | विरोध में खड़े होने पर पंद्रह हजार के गबन मे गिरफ्तारी की बात सुनकर अरविंद घबरा जाता है और अनुराधा को ही शिकायत वापस लेने की सलाह देने लगता है | अरविंद में आए इस परिवर्तन को देखकर निराश अनुराधा निकल जाती है |अरविंद लीला को प्रेसिडेंट की बात बता ही रहा है तभी ट्रक दुर्घटना में अनुराधा की मर जाने की खबर पहुंचती है अरविंद आहत होता है |

धीरे-धीरे प्रकाश में महाभारत की कथा प्रारंभ होता है अश्वत्थामा भरे दरबार में द्रोपदी का अपमान होने पर भी सभी के चुप रहने से उदास है | वह मां से पूछता है कि मेरे पिताजी चुप क्यों रहे ? मेरा खून भी नहीं ख़ौला ? मेरे संस्कारों में क्या गड़बड़ी थी ? कृपी पिता से पूछने के लिए कहती है | उनसे पूछने पर वे माता की और संकेत कर देते हैं | फिर बताते हैं कि

" उस दिन भूख मेरे सिद्धांत से बड़ी हो गयी | प्रतिशोध ने विवेक को जीता | उस दिन तुमने मुझे भड़काया और सुख सुविधा तथा राजकीय सम्मान ने मोहित किया था | राजकीय अन्न की वासना ने विवेक को उसी समय खरीदा था | अब इसमें परिवर्तन असंभव है और इसका परिणाम युद्ध तथा सर्वनाश के सिवा दूसरा हो ही नहीं सकता |"

कोर्ट की कार्यवाही में चंदू अनुराधा का पत्र पेश करता है, जिसमें उसे पर बीती सभी बातें लिख दी थी | उनके आधार पर अरविंद के चारों ओर आरोप के शिकंजे और भी दृढ़ हो जाते हैं | " क्या अरविंद ने प्रेसिडेंट को धकेला था ? इस प्रश्न पर चंदू - हो सकता है ' इतना ही उत्तर दे चुका था | अब अरविंद विमलेंदु से पूछता है कि, " चंदू सच क्यों नहीं बोला ? " तब विमलेन्दु द्रोणाचार्य नाटक को याद करने के लिए कहता है |

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

कौरव - पांडवों के युद्ध में पंद्रवे दिन जब द्रोणाचार्य की सेनापतित्व में कहर ढाया जा रहा था, तब अश्वात्थामा मारे जाने की खबर फैलती हैं | द्रोणाचार्य सच्चाई जानने के लिए बेकाबू बने हैं, पर कोई सत्य नहीं बता सकता है |

अंत में द्रोणाचार्य युधिष्ठिर से गुरुदक्षिणा के रूप में सच्चाई पूछते हैं | द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा के मारे जाने की सच्चाई समझने के लिए ध्यानस्थ होते हैं | इसी समय पांडवों के सेनापति घृस्टदयुम्न द्वारा द्रोणाचार्य का वध किया जाता है |

बुरे कर्मों का अंत कभी अच्छा नहीं हो सकता है | बुराई का अंत हमेशा बुरा होता है | जो व्यक्ति अपने फायदे के लिए दूसरों के साथ अन्याय करता है उसके साथ अंत में अन्याय ही होता है अन्याय करना और अन्याय सहना दोनों ही गलत है |

कौरवों का अन्न खाने के कारण द्रोणाचार्य द्रौपदी वस्त्रहरण के समय कठपुतली बनते हैं | प्रेसिडेंट की कृपा भोगने के कारण अरविंद अनुराधा के चीर हरण का न्याय पूर्ण प्रतिकार नहीं कर सका | सुख सुविधा मनुष्य को नपुंसक बना देता है |

३.३. वर्तमान शिक्षक और गुरु द्रोणाचार्य ने प्रतिकार नहीं किया

लीला अरविंद को प्रिंसिपल से हुई बातें बताकर रिपोर्ट वापस लेने के लिए हठ करती है | इसी समय अरविंद का प्रिय विद्यार्थी चंदू आता है | वह बताता है कि प्रोफेसर मिश्रा ने नकल के झूठे आरोप में उसे फसाया है | उसके सामने ही प्रेसिडेंट का लड़का नकल कर रहा था | हवा के झोंकों से उसका नकल का पर्चा चंदू के पास आया | चंदू ने जब उसे प्रोफेसर को देने उठाया, तो मिश्रा ने उसे पकड़ा और रिपोर्ट कर दी | अब उसकी रिपोर्ट यूनिवर्सिटी भेजी जा रही है राजकुमार की रिपोर्ट दबाई जा रही है | चंदू के पिता प्रेसिडेंट के राजनीतिक विरोधक है, अतः उसे विरोध की बलि बनाया जा रहा है विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में चंदू चाहता है कि राजकुमार की रिपोर्ट भी यूनिवर्सिटी भिजवाई जाये |

प्रेसिडेंट अरविन्द से मिलने आते हैं | वह नकल के मामलों में सभी को दोषी मानते हैं| प्रेसिडेंट अपनी राजनीतिक प्रतिमा कलंकित न हो इसलिए वह अपने बेटे की रिपोर्ट दबाना चाहते हैं, तथा ऐसे न होने पर कॉलेज बंद कर देने का डर दिखाता है | परंतु अरविंद अपने निर्णय पर डटा रहता है | नौकरी चली जाने का भय उसके संदर्भ में नाकाम होता है | और प्रेसिडेंट अरविंद को प्रिंसिपल बनाने की बात कहता है अंत मे अरविन्द को प्रिंसिपल पद मिलता है और चंदू को कॉलेज से रेस्टिकेट करदिया जाता है |

अरविंद भी अपनी विचार संहिता को भूलाने के लिए मजबूर हो जाता है क्योंकि पत्नी और पुत्र दोनों उसपर आश्रित है |वर्तमान शिक्षक सत्ता की कठपुतली बना हुआ है वर्तमान शिक्षक अपने सुख सुविधा के लिए अपने आदर्श और अपने विचार को दबा देता है | वर्तमान समय में जिसके पास सत्ता है वही आगे बढ़ता है |

कौरव पांडव विद्या ग्रहण कर रहे हैं ' जंगल में शिकार के लिए द्रोण तथा उनके शिष्य पहुंचे हैं | पर कहीं से कुशलता से बाण आते हैं कि हिरनो के पीछे लगे कुत्तों का भोकना ही बंद हो जाता है |

खोजते हुए सब एकलव्य के पास पहुंचते ही एकलव्य द्रोणाचार्य को अपना गुरु मानता है, उन्होंने उसे शिष्य के रूप

में स्वीकार करने से नकारा था | बाद में एकलव्य ने द्रोण का पुतला बनाकर अपनी साधना से आश्चर्यकारक कौशल प्राप्त किया था | एकलव्य इसे गुरु कृपा ही मानकर गुरु दक्षिणा के रूप में मुंह मांगा धन, राज तथा अपने प्राण भी देने के लिए तैयार है | तब द्रोणाचार्य एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अंगूठा मांगते हैं | अर्जुन भी इस अजीब गुरु दक्षिणा की मांग से चकित है | द्रोणाचार्य बताते हैं कि अर्जुन को एक मात्र श्रेष्ठ वीर बनाने के लिए ही उन्होंने ऐसा किया है | तभी एक थाल में कटे हुए अंगूठे को लिए एकलव्य आता है और गुरु दक्षिणा समर्पित करता है

द्रोणाचार्य अपने राजमार्ग को एकलव्य का अंगूठा लेकर और अरविंद चंदू के न्याय पूर्ण पक्ष की बलि चढ़ाकर निष्कलंक बनाते हैं | सुविधा और सुरक्षा की प्रति आकर्षण कृपी द्वारा द्रोणाचार्य को राजकीय संरक्षण प्राप्त करने के लिए विवश करता है |

अश्वत्थामा भरे दरबार में द्रोपदी का अपमान होने पर भी सभी के चुप रहने से उदास है |

वह मां से पूछता है कि मेरे पिताजी चुप क्यों रहे ? मेरा खून भी नहीं ख़ौला ? मेरे संस्कारों में क्या गड़बड़ी थी ? कृपी पिता से पूछने के लिए कहती है | उनसे पूछने पर वे माता की और संकेत कर देते हैं | फिर बताते हैं कि " उस दिन भूख मेरे सिद्धांत से बड़ी हो गयी | प्रतिशोध ने विवेक को जीता | उस दिन तुमने मुझे भड़काया और सुख सुविधा तथा राजकीय सम्मान ने मोहित किया था | राजकीय अन्न की वासना ने विवेक को उसी समय खरीदा था | कौरवों का अन्न खाने के कारण द्रोणाचार्य द्रौपदी वस्त्रहरण के समय कठपुतली बनते हैं | प्रेसिडेंट की कृपा भोगने के कारण अरविंद अनुराधा के चीर हरण का न्याय पूर्ण प्रतिकार नहीं कर सका |

३.४. शैक्षणिक भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार अर्थात भ्रष्ट + आचार। भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण। अर्थात भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो। किसी को निर्णय लेने का अधिकार मिलता है तो वह एक या दूसरे पक्ष में निर्णय ले सकता है। यह उसका विवेकाधिकार है और एक सफल लोकतन्त्र का लक्षण भी है। परन्तु जब यह विवेकाधिकार वस्तुपरक न होकर दूसरे कारणों के आधार पर इस्तेमाल किया जाता है तब यह भ्रष्टाचार की श्रेणी में आ जाता है अथवा इसे करने वाला व्यक्ति भ्रष्ट कहलाता है। किसी निर्णय को जब कोई शासकीय अधिकारी धन पर अथवा अन्य किसी लालच के कारण करता है तो वह भ्रष्टाचार कहलाता है।

प्रेसिडेंट अपनी राजनीतिक प्रतिमा कलंकित न हो इसलिए वह अपने बेटे की रिपोर्ट दबाना चाहते हैं, तथा ऐसे न होने पर कॉलेज बंद कर देने का डर दिखाता है | परंतु अरविंद अपने निर्णय पर डटा रहता है |

नौकरी चली जाने का भय उसके संदर्भ में नाकाम होता है | और प्रेसिडेंट अरविंद को प्रिंसिपल बनाने की बात कहकर तथा निर्णय के लिए समय लेकर चले जाते हैं |

कौरव पांडव विद्या ग्रहण कर रहे हैं ' जंगल में शिकार के लिए द्रोण तथा उनके शिष्य पहुंचे हैं | पर कहीं से कुशलता से बाण आते हैं कि हिरनो के पीछे लगे कुत्तों का भोकना ही बंद हो जाता है | खोजते हुए सब एकलव्य के पास पहुंचते

ही एकलव्य द्रोणाचार्य को अपना गुरु मानता है, उन्होंने उसे शिष्य के रूप में स्वीकार करने से नकारा था | बाद में एकलव्य ने द्रोण का पुतला बनाकर अपनी साधना से आश्चर्यकारक कौशल प्राप्त किया था | एकलव्य इसे गुरु कृपा ही मानकर गुरु दक्षिणा के रूप में मुंह मांगा धन, राज तथा अपने प्राण भी देने के लिए तैयार है | तब द्रोणाचार्य एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अंगूठा मांगते हैं |

अर्जुन भी इस अजीब गुरु दक्षिणा की मांग से चकित है | द्रोणाचार्य बताते हैं कि अर्जुन को एक मात्र श्रेष्ठ वीर बनाने के लिए ही उन्होंने ऐसा किया है | तभी एक थाल में कटे हुए अंगूठे को लिए एकलव्य आता है और गुरु दक्षिणा समर्पित करता है

अरविंद द्वारा किए गए अन्याय चंदू के साथ तथा गुरु द्रोणाचार्य के द्वारा किया गया अन्याय एकलव्य के साथ शैक्षणिक भ्रष्टाचार के दृष्टि से देखा जा सकता है|

निष्कर्ष

नाटक में वर्तमान काल अरविंद की कथा तथा महाभारत काल के द्रोणाचार्य के प्रसंग आया है | परंतु नाटक में दो कथा समानांतर चल रही है उसमें जो पात्र है कुछ हद तक समानांतर उतरते हैं | अरविंद को द्रोणाचार्य के समानांतर तथा लीला को कृपी के समानांतर तथा अनुराधा को द्रोपदी के समानांतर मान सकते हैं | वहीं दूसरी ओर पात्रों में विषमता भी दिखाई पड़ती है जैसे चंदू न एकलव्य के असमानांतर है तथा भीष्म न प्रेसिडेंट के असमानांतर है इसलिए कहा जा सकता है कि कुछ हद तक पात्रों में समानता है क्योंकि कथा में चंदू, एकलव्य,प्रेसिडेंट यह सभी पात्र अलग-अलग मोड़ लेते हैं इनमें समानता नहीं के बराबर है |

सुविधा और सुरक्षा की प्रति आकर्षण कृपी द्वारा द्रोणाचार्य को राजकीय संरक्षण प्राप्त करने के लिए विवश करता है | अरविंद भी अपनी विचार संहिता को भूलाने के लिए मजबूर हो जाता है क्योंकि पत्नी और पुत्र दोनों उसपर आश्रित है | द्रोणाचार्य अपने राजमार्ग को एकलव्य का अंगूठा लेकर और अरविंद चंदू के न्याय पूर्ण पक्ष की बलि चढ़ाकर निष्कलंक बनाते हैं |

वर्तमान समय में भी ऐसे द्रोणाचार्य है जो अपने सुख सुविधा के लिए शिक्षा को पैसे से तोल रहे हैं, और ऐसे द्रोणाचार्य के कारण शिक्षा व्यवस्था बिकाऊ हो चुकी है जो व्यक्ति प्रतिभाशाली है उसे दबाकर जो प्रतिभाशाली नहीं है उसे ऊपर उठाया जाता है |

वर्तमान समय में जिसके पास धन है, सत्ता है वही आगे जाता है जिसके पास धन नहीं है, सत्ता नहीं है वह पीछे रह जाता है |

कौरवों का अन्न खाने के कारण द्रोणाचार्य द्रौपदी वस्त्रहरण के समय कठपुतली बनते हैं | प्रेसिडेंट की कृपा भोगने के कारण अरविंद अनुराधा के चीर हरण का न्याय पूर्ण प्रतिकार नहीं कर सका | सुख सुविधा मनुष्य को नपुंसक बना देता है |

तृतीय अध्याय

एक और द्रोणाचार्य नाटक का भाषा शैली भाषाशैली

भारतीय आचार्यों ने वृत्ति रूप में नाटक की शैलियों का ही विवेचन किया है | वृतियों को भारतीय आचार्य नाटक की माताएं मानते हैं | लेकिन आधुनिक भाषा में जिस शैली कहते हैं उसमें और वृत्ति में कुछ भेद है | वृत्ति में भारती, सात्तवीकी, कौशिकी, आर्यभटी वृतियों का अंतर भाव होता है तो शैली में वेदरभो, गोंडीय, पांचाली शैलियों का अंतर भाव होता है शैली का संबंध नाटक के बाहयरंग याने उसकी अभिव्यक्ति से अर्थात भाषा से संबंधित है | नाटक की सफलता में शैली तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण होता है |

लेखक की विशिष्ट दृष्टि ही शैली को जन्म देती है | अर्थात समर्थ शैलीकार ही भाषा का सफल प्रयोग कर सकता है | लेखक की विशिष्ट शैली उसके विचारों को अभिव्यक्ति देती है | लेखक की शब्द योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्य का बनावट और उसकी ध्वनि यह सब शैली के अंतर्गत आते हैं |

प्रस्तुत नाटक में व्यंग्यात्मक भाषा फारसी उर्दू शब्दों की मात्रा में अंग्रेजी शब्दों का ज्यादा प्रयोग आया है | कुछ संस्कृत निष्ठ शब्दों का भी प्रयोग हुआ है | फिर भी कुछ मिलाकर भाषा पर शंकरशेष जी का प्रभाव था ये माना जा सकता है |

१. व्यंग्यपूर्ण भाषा -

' एक और द्रोणाचार्य ' नाटक में शिक्षा क्षेत्र में प्रचलित कृष्ण कृतियों पर व्यंग्य करता है | इन कृत्यों का पर्दाफाश किया है | जैसे प्रिंसिपल कहते हैं - "प्रेसिडेंट साहब आपका मालिक है | अन्नदाता है | उनका कॉलेज उनकी मर्जी | इसलिए तो कहता है, नौकरी करनी है,तो कान बंद कर लो | आंखें मूंद लो | मुंह खुला रखो बोलने के लिए नहीं, रोटी खाने के लिए | " उस कमीने आदमी ने दुकानों की तरह बीस शिक्षण संस्थाएं खोल रखी हैं | साथ ही लेने देन का व्यापार करता है | शिक्षण संस्थानों की लाखों रुपयों का ग्रंट का उपयोग यह शिक्षा शास्त्री अपने लेनदेन का व्यापार करता है |इस प्रकार कहीं-कहीं व्याख्यात्मकता और व्यंजकता उभर आयी है | परंतु भाषिक स्तर का यहां ज्यादा ध्यान नहीं लगता है इसके बारे में जयदेव तनेजा भी लिखते हैं - " पौराणिक और समकालीन दृश्यों में यदि भाषा का अंतर भी लिखा है -सम्भवत :रचना अधिक रोचक और कलात्मक हो ही सकती थी "|

2) मुहावरों का प्रयोग

डॉ. शंकर शेष ने प्रस्तुत नाटक में भाषा की सौंदर्य वृद्धि के लिए जगह-जगह पर मुहावरों का प्रयोग किया है | जैसे

१) जा कर बैठो हरिश्चंद्र के खाली आसन......

२) पहले अपनी चमड़ी बचाओ और तब लगाओ हाथ दूसरों को

३)केस को रखा दफा कराओ...

४) सैकड़ो विद्यार्थी मेरे खून के प्यासे हो जायेगे |

५) अपमान का घूंट पिओ |

३) कहावते -

१) जान है, तो जहान है | जैसे लोकोक्तियां नगन्य हीं है |

४)सुक्तियों का प्रयोग -

नाटक करने से का सुक्तियों प्रयोग भी किया है जैसे...

१) घर अंधेरा रखकर मंदिर में दिया जलाने से कोई फायदा होगा ?

२) आवेश में कोई तर्क नहीं होता

३) भूख मेरे सिद्धांतों से बड़ी हो गई है | प्रतिशोध ने मेरे विवेक को जीता |

५) नयी भाषा का प्रयोग :

आजकल गद्य और पद्य में तीखी जन भाषा का प्रचलन है | इसका प्रभाव भी प्रस्तुत नाटक की भाषा पर पड़ा है |

१) " मै अब ऐसी पीढ़ी तैयार करूंगा, जो केवल युद्ध की भाषा बोलेगी |

२) " तुम से सत्ता से जोड़ने के लिए कह रही थी, सत्ता स्वयं चली आ रही है |"

3)" आत्माबलिदान की भाषा का त्याभिचार करता है | "

4)" लेकिन मनुष्य का जन्म हमेशा एक अनचाही अवस्था मे होता है, तो मै क्या करू ?

६)संस्कृत तत्सम शब्द :

आचार्य, अपमान, कल्पना, विधवत्ता, समर्पित, शक्ति योजना,जाति, सुविधा, हरिश्चंद्र, आदर्श, नाटक, नपुंसक विधवा, सिद्धांत, स्त्री,चमत्कार पांडव, बाण, धनुर्विद्या आदि |

७) देशज शब्द :

चमड़ी, कतौजी, चूतियापा, लिजलिजे, पचडे, पट्ठा लौढो, कचरा, गजेड़ी, सट्टा, दारिद्री आदि |

८)अंग्रेजी शब्द :

ऐकशन, बिल्डिंग, क्लर्क वॉइस प्रिंसिपल, ग्लोरिफाई, मिडिल क्लास प्रोफेशनल्स, एथिक्स, एक्सीडेंट, प्रेसिडेंट,मनी ऑर्डर,इन्फॉर्म, रिपोर्ट प्रोफेसर,कमेटी, मेंबर,जूनियर,लेक्चरर,कॉलेज,यूनिवर्सिटी,पर्सनालिटी पब्लिक आदि

९)अ्ाभ्यता या मराठीपन -

१) तुम्हारा नाम लेकर लौंडो को भड़का रहा है |

२) फर्स्ट ईयर का लौंडा नहीं हु ...

३) अपने बाप का क्या जात है |

४) मैंने नहीं बुलाया तुम्हें मेरी गरज

९) अश्लीलता -

१) छोड़ो ये सिद्धांत का झमेला आ गया जोश मे | हो गया झमेला, होड़ लगी हुई थी , हरामी लोगों में...किसी की जान जाय और ये साले अपनी पब्लिसिटी करें इस साले ने मुसीबत खड़ी कर दी |

१०) अलंकार योजना:

उचित अलंकारों के प्रयोग के कारण भाषा सौंदर्य में वृद्धि होती है | अलंकारों का यही धर्म है | प्रस्तुत नाटक में भी उपमा रूपक जैसे अलंकारो का उपयोग किया है |

उपमा -

१) फूल- सी बच्ची

२) लोग कैसे चीटियों जैसे......

३) इतिहास की धार में लकड़ी के ठूँठ की तरह बहता हुआ | टूटे जहाज सा द्रोणाचार्य मेरी चंमड़ी अब गेंड़े की तरह मोटी...

रूपक :

व्यवस्था की लाइट हाउस में अपनी दिशा मांगने वाला.....

समझौते के फंदे पर सड़े हुए आटे में बिलबिलाने वाले कीड़ा नाटककार ने भाषा की अभिव्यक्ति के लिए व्याकरणिक चिन्हो का प्रयोग कर भाषा को अधिक संवेदनशील और प्रभावकारी बनाया है |

निष्कर्ष

नाटक 'एक और द्रोणाचार्य ' के संवादों की भाषा कुछ के सार्थक अपवाद को छोड़कर लघु चुस्त दुरुस्त वेगपूर्ण और सुंगठित मानी जा सकती है | भाषा में सांकेतिक, काव्यात्मकता, व्यंगात्मकता नाट्य गुण,विषयअनुकूलता, संवेदनशीलता, सरस मधुरता आदि सभी गुण विघमान है | कुल मिलाकर भाषा शैली कि दृष्टि से यह रचना समिश्रित फलदायी है |

एक और द्रोणाचार्य शीर्षक की सार्थकता

एक और द्रोणाचार्य नाटक एक और द्रोणाचार्य नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इस नाटक में वर्तमान का द्रोणाचार्य अरविंद है जो अपनी सुख सुविधा के लिए अधर्म का पक्ष ले रहा है | समाज में बदलाव आना अत्यधिक आवश्यक है | धन के लिए पद के लिए अन्याय करना पड़े तो धिक्कार है ऐसे धन और पद पर | जो मनुष्य के भीतर की मानवता को ही खत्म कर दे | आज भी इतिहास उस द्रोणाचार्य को कोस रहा है जिसने वैभव के लिए एकलव्य की बलि चढ़ाई, द्रोपदी का चीर हरण होते हुए देखता रहा | ऐसे भ्रष्टाचारी शिक्षकों का अंत होना निश्चित है |

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

संदर्भ सूची

1. और एक द्रोणाचार्य - नाटक - डॉ शंकरशेष
2. महाभारत कालीन कथा एवं
3. एक और द्रोणाचार्य नाटक
4. का समानांतर अनुशीलन - अज्ञात
5. ओशो - एक और द्रोणाचार्य
6. डॉ जनेजा
7. डॉ लाल बिहारी शास्त्री
8. डॉ सुनील कुमार लवढे
9. डॉ. सीमा चौधरी डॉ. रंजन पाल
10. डॉ. ओमप्रकाश सिन्हा
11. डॉ. हरीश चंद्र लाल
12. डॉ. लक्ष्मीकांत
13. डॉ. कमला सिंह
14. डॉ. उषा गुप्ता